उपसंहार

उपसंहार

प्रयोगधर्मी नाटककार जगदीशचंद्र माथुर हिंदी साहित्य के एक महान नाटककार तथा साहित्यकार हैं। उनका जन्म एक छोटे से कस्बे में मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। ग्रामीण तथा मध्यवर्गीय परिवार की समस्याएँ उनके साहित्य में झलकती है। माथुर के पिता लक्ष्मीनारायण माथुर स्कूल में अध्यापक थे। माता एक आदर्श भारतीय नारी थी। अपने पिताजी के विचारों का उन पर काफी प्रभाव पड़ा था। उसी समय के परिवेश का भी उनके जीवन पर तथा साहित्य पर प्रभाव पड़ा है।

दो विश्वयुद्धों के बीच माथुर पले हैं इसलिए उनकी साहित्य कृतियों में युद्धों के प्रसंग दिखाई देते हैं। तीनों नाटकों में उन्होंने युद्ध तथा संघर्ष के प्रसंग दिखाए हैं। उनकी एकांकियों के विषय भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में युद्धों के साथ संबंध रखनेवाले हैं। माथुर जिस वक्त सरकारी नौकरी में आए उस समय देश में अंग्रेजी शासन था। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से अन्याय, अत्याचार से त्रस्त जनता को अँग्रेजी शासन के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरणा दी है ।

माथुर जब इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ते थे तब देश में आजादी का आंदोलन चल रहा था। अनेक कवियों ने अपने साहित्य का विषय राष्ट्रीयता से संबंधित चुना था। माथुर ने इसी समय सुमित्रानंदन पंत से प्रेरणा ली और अपना साहित्य लेखन शुरू किया।

माथुर नौकरी करते वक्त भी कभी एक जगह पर ज्यादह दिनों तक नहीं रूके। आजाद पंछी की तरह वे निरंतर घूमते रहे। अपने जीवन में शिक्षा-सचिव, आकाशवाणी के महानिदेशक आदि उच्च पदों पर भी उन्होंने कार्य किया।

साहित्य क्षेत्र में भी उनका कार्य महत्त्वपूर्ण है । एकांकीकार, नाटककार तथा संस्मरणकार के रूप में वे हमारे सामने आते हैं।

एकांकी संग्रह -

1. भोर का तारा।
2. ओ मेरे सपने।
3. मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी।

नाटक -

1. कोणार्क।
2. पहला राजा।
3. शारदीया।
4. दशरथनंदन।
5. रघुकुलरीति।

लघुनाटक -

1. कुवरसिंह की टेक।
2. गगन संवारी।

संस्मरण / चरित लेख -

1. दस तसवीरें।
2. जिन्होंने जीना जाना।

आत्मकथा -

1. बोलते क्षण

संपादन

1. प्राचीन भाषा नाटक संग्रह

माथुर के साहित्य पर उनका परिवार उनकी मित्रमंड़ली, तत्कालीन आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियाँ और उनके व्यक्तित्व का काफी प्रभाव दिखाई देता है। माथुर की साहित्य सृष्टि संख्या से कम लेकिन मूल्यांकन की दृष्टि से संपन्न है।

'कोणार्क' नाटक की कथावस्तु ध्वस्त कोणार्क के सूर्य मंदिर के ऐतिहासिक प्रसंग पर आधारित है। इतिहास और कल्पना कथावस्तु के आधार हैं। कथावस्तु के आधार पर कोणार्क की कथावस्तु मिश्र कथावस्तु मानी जाती है। कथावस्तु में मौलिकता एवं संक्षिप्तता के साथ रोचकता भी है। पात्रों की संख्या अत्यंत सीमित है।

नाटक में मुख्य कथा के साथ कुछ सहायक कथाएँ भी हैं। कोणार्क मंदिर के निर्माण की कथा के साथ विशु के प्रेम की कथा, नरसिंह द्वारा यवनों के पराभूत होने की कथा आदि कथाएँ आई हैं। कथानक के आदि, मध्य और अंत की स्पष्टता कथावस्तु में है। नाटक का अंत दुखांत है। नाटक की कथावस्तु में स्थान-स्थान पर संघर्ष की स्थितियाँ हैं जो कथावस्तु को रोचक और आनंददायी बनाती है। नाटक में अंतर-बाह्य संघर्ष स्पष्ट रूप में दर्शाया गया है। एक ओर जहाँ विश्वासघातकी चालुक्य नरेश बन जाने की घोषणा करता है तब चालुक्य की सेना और धर्मपद के नेतृत्व में आए श्रमिकों के बीच संघर्ष की स्थिति पैदा होती है। दूसरी ओर धर्मपद को अपने पुत्र के रूप में पाकर विशु अंतर्द्वंद्व संघर्ष करने लगता है।

नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक की कथावस्तु में अर्थप्रकृतियाँ, संधियाँ और कार्यावस्थाएँ इनका समायोजन हुआ है। रस एवं संघर्ष की योजना में नाटकीय कथावस्तु को भावपूर्ण एवं सहज संवेद्य बनाया है। कथा शिल्प की दृष्टि से जगदीशचंद्र माथुर का कोणार्क नाटक एक सफल एवं मंचीय नाट्यकृति है।

'पहला राजा' नाटककार की निजी राय में प्रतीकात्मक नाटक है, और प्रयोग के धरातल पर वे इसे एक 'मॉड़र्न एलिगोरी' मानते हैं। आज के जनजीवन की सभी समस्याएँ नाटककार ने 'पहला राजा' में प्रतीक के रूप में चित्रित की है। क्योंकि प्रस्तुत कृति के बारे में नाटककार ने उसे 'भोगा हुआ यथार्थ' कहा है।

कथावस्तु के प्रकार के अनुसार पहला राजा नाटक की कथावस्तु मिश्र कथावस्तु है। इसमें ऐतिहासिकता, पौराणिकता और यथार्थता के साथ-साथ कल्पना का सहारा भी लिया गया है। कथावस्तु के साथ संबंध रखनेवाली अन्य सहायक कथाएँ भी हैं - राजा पृथु की कथा के साथ कवष और उर्वी की कथा, नदी पर बाँध बांधने की कथा, मुनियों की कूटनीति, शुक्रनीति की कथा आदि कथाएँ नाटक में पताका और प्रकरी रूप में संबंध रखती हैं। नाटक की कथावस्तु में मौलिकता एवं संक्षिप्तता के साथ-साथ रोचकता भी है। पात्रों की संख्या सीमित है। कथावस्तु का प्रारंभ और अंत भी दुखांत है। प्रारंभ में सुनीथा अपना पुत्र वेन की मृत्यु के कारण दु:खी है तो अंत में कवष और उर्वी की मृत्यु, पृथु को बाँध अधूरा रहने का दु:ख है।

कथावस्तु में स्थान-स्थान पर संघर्ष की स्थितियाँ हैं - आर्य-अनार्य संघर्ष, पृथु का अर्चना के साथ प्यार और उसी समय अकाल पड़ना, मुनि और जनता का पृथु के सामने प्रदर्शन, संघर्ष की स्थितियाँ उत्पन्न करता है। उर्वी और कवष का अनुष्ठान नष्ट करना पृथु का बाह्य संघर्ष है। लेकिन बाँध बांधना प्रजा को संतुष्ट करना यह उसका आंतरिक संघर्ष है। शिल्प के धरातल पर माथुर ने सूत्रधार और नटी का प्रयोग घटनाओं के बीच की टूटी हुई कड़ी को जोड़ने के लिए किया है। चरित्रों की मनोदशा का पूर्वाभास देने, कालक्षेपण की सूचना देने के निमित्त भी सूत्रधार नटी का प्रयोग किया है। कथावस्तु की सभी अवस्थाएँ पूर्ण रूप से यहाँ नहीं मिलती किंतु इनका पूर्ण अभाव भी नहीं है। वस्तु के आधार, प्रकार तथा रूप में दिखाई देते हैं।

'शारदीया' नाटक एक कलाकार की कला और उसके उदात्त प्रेम की कहानी है। नाटककार ने ऐतिहासिक घटना के आधार पर अपनी कल्पना के सहारे प्रस्तुत नाट्य कृति की रचना की है। कथावस्तु के प्रकार के अनुसार शारदीया की कथावस्तु मिश्र कथावस्तु है। नाटक में मुख्य कथा- नरसिंहराव और बायजाबाई के प्रेम की है। इस कथा के साथ दौलतराव सिंधिया की कथा, खर्दा युद्ध की कथा, शर्जेराव घाटगे की कथा आदि सहायक कथाएँ हैं।

कथावस्तु में बाह्य और अंतर संघर्ष भी दिखाया है। अंतरसंघर्ष में नरसिंह की अपने प्यार को पाने की छटपटाहट, हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रयास, तो बाह्य संघर्ष में खर्दा युद्ध का प्रसंग दिखाया गया है। नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक की कथावस्तु में अर्थप्रकृतियाँ संधियाँ और कार्यावस्थाएँ इनका समायोजन हुआ है। शिल्प की दृष्टि से भी 'शारदीया' एक सफल नाटक है।

'कोणार्क' नाटक में कुल मिलाकर बारह पात्र हैं, इनमें विशु, धर्मपद, सौम्य, श्रीदत्त, नरसिंहदेव और राजराज चालुक्य कुल पाँच ही ऐसे पात्र हैं जिनमें चरित्र और व्यक्तित्व डाला गया है। अन्य पात्रों के भीतर कोई चारित्रिक गुणधर्म डालने का प्रयास नहीं किया है। ये सभी पात्र नितांत गौण पात्र हैं। प्रस्तुत नाटक में कोई भी स्त्री पात्र नहीं है।

उपर्युक्त पात्रों में से अधिकांश पात्र गतिशील हैं। मुख्य रूप से धर्मपद और राजराज चालुक्य ये दो ही ऐसे पात्र हैं जो स्वभावत: स्थिर चरित्र की श्रेणी में आते हैं। विशु का अंतर्द्वंद्व उसकी चारित्रिक गतिशीलता में अद्‌भुत रूप से सहायक हुआ है। महाराज नरसिंहदेव एक गतिशील पात्र है। धर्मपद एक स्थिर चरित्र होते हुए भी महान चरित्र है। वह जिसे चाहे उसका हृदय परिवर्तन करने का

सामर्थ्य रखता है। राजराज चालुक्य अवश्य ऐसा पात्र है जो प्रारंभ से लेकर अंत तक स्थिर चरित्र रहा है किंतु अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ने में वह भी नहीं चूकता। अन्य पात्र प्रायः वर्गगत हैं और अपनी वर्गगत विशेषताएँ प्रकट करते हैं।

'पहला राजा' नाटक के पात्र पौराणिक वातावरण में पलकर अर्थ व्यक्त करनेवाले प्रतीक चरित्र हैं। नाटक में सूत्रधार और नटी को छोड़कर कुल मिलाकर पंद्रह पात्र हैं। इनमें सात पुरूष पात्र, चार स्त्री पात्र और चार अन्य पात्र हैं। पृथु वेन का भुजापुत्र है वह नाटक का नायक है। कवष जंघापुत्र है वह निषाद होने के कारण वह राज्य का अधिकारी नहीं बन सकता लेकिन धरती का वह सच्चा सेवक है। गर्ग अत्रि और शुक्राचार्य ये मुनित्रय हैं, तीनों स्वार्थ के हेतू एक हैं, परंतु व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए झगड़ते भी हैं। सूत और मागध स्तुतिपाठक हैं। स्त्री पात्रों में सुनीथा अंगपत्नी और वेन माता है। अर्चना मुनिकन्या है जो पृथु के साथ शादी करती है। उर्वी जनसामान्य की पुत्री है। उसे कवष और पृथु से समान प्यार है। वह पृथु का प्रेयसीत्व छोड़कर कवष की पत्नी बनना स्वीकार करती है। दासी एवं अन्य पात्र अपने-अपने कर्तव्य कर्म को निभानेवाले पात्र हैं। प्रत्येक पात्र की अपनी-अपनी चारित्रिक विशेषताएँ हैं।

पृथु और कवष नायक तथा अर्चना और उर्वी नायिकाएँ हैं। मुनित्रय गर्ग, अत्रि, शुक्राचार्य खलनायक के रूप में प्रस्तुत हुए हैं।

'शारदीया' नाटक के सभी पात्र ऐतिहासिक पात्र हैं। कुल मिलाकर तेरह पात्र हैं। तीन स्त्री पात्र हैं और बाकी पुरूष पात्र हैं। पुरूष पात्रों में नरसिंहराव नायक तथा बायजाबाई का प्रेमी है। शर्जेराव घाटगे खलनायक के रूप में चित्रित हुआ है जो कागल गाँव का किलेदार और नाना फड़णवीस और बाद में सिंधिया का कर्मचारी बनता है। दौलतराव सिंधिया सहनायक है जो महादजी सिंधिया का दत्तक पुत्र ग्वालियर राज्य का नरेश है। बाकी पुरूष पात्रों में परशुराम भाऊ मराठा दल का सेनापति, बाबा फडके मराठा दल की रसद सामग्री का प्रधान, जिन्सवाले ग्वालियर का कुलीन सरदार तथा नरसिंहराव का मित्र है। इन पात्रों का थोड़ा बहुत चरित्रांकन हुआ है। बाकी चार पुरूष पात्र गौण पात्र हैं। स्त्री पात्रों में बायजाबाई नायिका है, जो शर्जेराव की पुत्री है। पूरे नाटक में इस पात्र का चरित्रांकन हुआ है। बाकी दो स्त्री पात्र सरनाबाई और रहीमन गौण स्त्री पात्र हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत नाटक के सभी पात्र ऐतिहासिक नाट्य स्थितियाँ तैयार करने में आवश्यक और महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

'कोणार्क' नाटक के संवादों में स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, सरलता, रोचकता प्रसंगानुकूलता, उपयुक्तता, मार्मिकता, संबद्धता, मनोरंजकता, मनोवैज्ञानिकता, गतीशीलता, चरित्र प्रकाशन की क्षमता आदि गुण विद्यमान हैं। नाटक के संवाद नाटक की ऐतिहासिकता अक्षुण्ण रखने में सक्षम सिद्ध हुए हैं। इन संवादों के द्वारा पात्रों का चरित्र-चित्रण अत्यंत सजीव रूप में हुआ है।

'कोणार्क' नाटक के संवादों की तरह 'पहला राजा' नाटक के संवादों में भी सभी गुण विद्यमान हैं। संवाद पात्रों का चरित्र-चित्रण करने में सफल हुए हैं। इन संवादों में मनुष्य के हृदय को छू लेने की क्षमता है, तो कई संवाद पात्रों के अंतर्द्वंद्व तथा उनकी मानसिकता स्पष्ट करने में असफल हुए हैं। संवाद रोचक भी हैं और प्रसंगानुकूल होने के कारण उनमें कथावस्तु का विकास करने की क्षमता है। उनमें कई संवाद भविष्य में घटनेवाली अलक्ष्य घटनाओं के संकेत देने की क्षमता रखते हैं।

'कोणार्क' और 'पहला राजा' इन नाटकों के संवादों की तरह 'शारदीया' नाटक के संवादों में भी कथोपकथन के सभी गुण दिखाई देते हैं। इन संवादों से रचना में कथाशिल्प एवं नाटकीयता का अच्छा संयोग हुआ है। संवादों से नाटक की कथा को गति और शक्ति प्राप्त हुई है। ये संवाद प्रायः समयानुकूल, संक्षिप्त, चुटीले एवं सरस हैं। इन संवादों की यथार्थता उन्हें प्राणवान बनाती है। पात्रों की अंतर्बाह्य परिस्थितियों का चित्रण भी संवादों के माध्यम से हुआ है। संवादों द्वारा नाटक में जो समस्याएँ उठाई गई हैं उनकी अभिव्यक्ति होती है और नाटकीयता के उद्देश्य स्पष्ट होते हैं। संवादों से नाटक की ऐतिहासिकता स्पष्ट हुई है। नाटक के कुछ संवाद लंबे हैं, किंतु इन से कथा की गति अथवा नाटकीयता में शैथिल्य नहीं आया है। आलोच्य नाटकों के संवाद कथोपकथन के गुणों की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

'कोणार्क' नाटक में चित्रित देशकाल वातावरण मूल कथानक के अनुकूल और उचित है। नाटक में सूत्रधार और वाचिकाओं द्वारा अंक के पहले घटनेवाली घटनाओं के बारे में दर्शकों को कहा जाता है। नाटक में आंतरिक और बाह्य वातावरण यथातथ्य हुआ है। संवादों के माध्यम से हाव-भाव द्वारा उस पात्र के चित्रण के साथ-साथ दूसरे पात्र का चित्रण हुआ है। बाह्य वातावरण में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण हुआ है। जिसके कारण नाटक की

कथावस्तु में देशकाल वातावरण प्रस्तुत हुआ है। पूरी कथावस्तु कोणार्क मंदिर के प्रागण में घटती है। अभिनेयता की दृष्टि से यह योजना महत्त्वपूर्ण है।

'पहला राजा' इस नाटक में देशकाल वाचक संकेत संवादों के माध्यम से प्रयुक्त होते हैं। सूत्रधार और नटी आकर स्थान तथा काल का हमें पता बताते हैं। नाटक में आंतरिक और बाह्य वातावरण चित्रित किया गया है। आंतरिक वातावरण पात्रों की मानसिक स्थिति, हावभाव और अंतर्द्वंद्व के द्वारा तो बाह्य वातावरण में सभी प्रकार की परिस्थितियाँ चित्रित की हैं।

नाटक की पूरी कथावस्तु स्थानेश्वर के निकट ब्रह्मावर्त में घटती है नाटक का संपूर्ण काल पौराणिक है और पात्रों के व्यवहार काल से मेल रखते हैं। वातवरण निर्मिति भावात्मक न होकर केवल बौद्धिक स्तर पर होती है।

'शारदीया' ऐतिहासिक नाटक होने के कारण उसमें देश-काल वातावरण का चित्रण अधिक हुआ है। उसमें राजनीतिक परिवेश, भाषा, आचार, व्यवहार एवं रहन-सहन का यथार्थ परक चित्र प्रस्तुत हुआ है। नाटक में देश-काल वाचक संकेत पात्रों के संवादों से तथा प्रत्येक दृश्य और अंक के पहले मिलते हैं। नाटक ऐतिहासिक होने के कारण कथानुकूल दृश्य संयोजन एवं रंग-संकेत दिए हैं। पात्रों के संवाद ऐतिहासिकता से मेल खाते हैं। पात्रों के हाव-भाव द्वारा तथा अंतर्द्वंद्व द्वारा आंतरिक वातावरण निर्माण हुआ है। परंपराएँ, वेशभूषा जीवन पद्धितियाँ आदि से वातावरण निर्मिति हुई है।

नाटक में ऐतिहासिक वातावरण को भव्य, वास्तविक, स्वाभाविक सुंदर और कलात्मक रूप में प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास नाटकार ने किया है।

'कोणार्क' नाटक स्वातंत्र्योत्तर नाटकों में अपना विशिष्ट महत्त्व रखता है। भारतवर्ष में अनेक महानगरों में इसका मंचन भी किया जा चुका है। जो अभिनेयता की दृष्टि से उसकी उत्कृष्टता का सूचक है। 'कोणार्क' नाटक की कथावस्तु सरल है। सामान्य दर्शक भी इसे समझ सकता है। नाटक का आकार संक्षिप्त है तथा पात्रों की संख्या कम होने के कारण प्रत्येक पात्र को दर्शक पहचानते हैं। नाटक की भाषा सामान्य जन की नही हैं। लेकिन यह भाषा कुछ विशिष्ट स्थलों पर ही है। अधिकांश स्थलों पर सामान्य भाषा का प्रयोग होने के कारण दर्शकों का मनोरंजन होता है। नाटक के कथोपकथन के द्वारा पात्रों के माध्यम से लेखक ने आंगिक, वाचिक, आहार्य तथा सात्विक अभिनय का दर्शन कराया है। नाटक में रंगमंच के सभी गुण हैं जिसके कारण कोणार्क एक सफल अभिनेय कृति मानी जाती है।

'पहला राजा' नाटक का आकार छोटा होने के कारण वह एक मंचीय नाटक है। प्रस्तुत नाटक के संवादों से अभिनेयता के प्रकार चित्रित हुए हैं। नाटक के सभी पात्रों द्वारा आंगिक, वाचिक, आहार्य तथा सात्विक अभिनय प्रस्तुत किया गया है। उसमें पात्रों के हर्ष, विषाद, अंतर्द्वंद्व, सुख-दुःख, वात्सल्य, करूणा आदि भावों का चित्रण हुआ है। पृथु का अंतर्द्वंद्व तथा आंतरिक संघर्ष दिखाया गया है। नाटक में नाटककार ने गीतों का भी प्रयोग किया है। प्रत्येक पात्र के संवादों में आरोह, अवरोह, दिखाई देता है। नाटक में सात्विक अभिनय के द्वारा आदर्श जीवन में भ्रष्टाचार तथा स्वार्थ किस प्रकार फैला है यह मुनियों के संवादों द्वारा मालूम हो जाता है। नाटक में पात्रों का अभिनय और कथावस्तु आज के जनजीवन की होने के कारण दर्शकों का पूरा मनोरंजन होता है।

'शारदीया' नाटक लेखक की ऐतिहासिक नाट्य-कृति है। नाटक के सभी पात्र ऐतिहासिक हैं। अभिनय के प्रकारों के अनुसार प्रस्तुत नाटक में आंगिक अभिनय सभी पात्रों के संवादों में दिखाया जाता है। नाटककार ने नाटक में गीतों का भी प्रयोग किया है, जिसके कारण वाचिक अभिनय प्रस्तुत हुआ है। नाटक की कथावस्तु अत्यंत संक्षिप्त एवं सरल है, साथ ही नाटक ऐतिहासिक होने के कारण दर्शक उब नहीं जाते। नाटक के संवाद छोटे होने के कारण पात्रों के द्वारा अच्छा अभिनय होता है और सामान्य दर्शक नाटक का आस्वाद लेता है। इस प्रकार 'शारदीया' नाटक एक सफल नाट्य-कृति है।

'कोणार्क' नाट्य रचना के पीछे नाटककार माथुर के अनेक उद्देश्य हैं। नाटककार के निम्नलिखित उद्देश्य सामने आते हैं - युगाविशेष की कला का चित्रण करना-नाटक में नाटककारने कोणार्क के अपूर्व सूर्य मंदिर के बारे में बताया है। उस सूर्य मंदिर की सुंदरता भग्नावस्था में ही लेखक के मन पर एक अमिट छाप छोड़ गई। इस अद्वितीय युगविशेष की कला को नाटक के माध्यम से चित्रित किया है। नाटककार का इस रचना के पीछे एक दूसरा उद्देश्य है कलाकार के अंतर्द्वंद्व को प्रस्तुत करना। 'कोणार्क' का सूर्यमंदिर क्यों टूटा ? इस सवाल को लेकर उन्होंने कलाकार के अंतर्द्वंद्व को चित्रित किया है। तत्कालीन राज्यव्यवस्था का चित्रण करना यह भी गौण रूप में नाटक का उद्देश्य माना गया है।

'पहला राजा' नाटक में नाटककार ने पौराणिक संदर्भ लेकर आज के जनजीवन की समस्याएँ चित्रित की हैं। इस रचना के पीछे नाटककार के अनेक उद्देश्य हैं जिनमें प्रमुख हैं - कर्म करने की प्रेरणा देना, राष्ट्रीय एकता को बनाए रखना, वर्णसंकरता को हटाना।

नाटक में पृथु, कवष और उर्वी कर्मशील पात्र हैं, इनके द्वारा कर्म करने की प्रेरणा मिल जाती है। नाटककार का दूसरा उद्देश्य महत्त्वपूर्ण है क्योंकि राष्ट्र में एकता होती तो वह राष्ट्र उन्नति के पथ पर ह्मेशा रहता है। लेकिन जिस राष्ट्र में एकता नहीं होती उस राष्ट्र में आंतरिक संघर्ष रहता है। उस राष्ट्र की उन्नति नहीं होती तथा बाकी राष्ट्र उस पर आक्रमण करते हैं। इसलिए राष्ट्रीय एकता को बनाए रखना नाटककार का यह उद्देश्य उचित एवं सार्थक है। नाटककार ने नाटक में वर्णसंकर की समस्या को भी चित्रित किया है। क्योंकि वर्णसंकर से उत्पन्न आदमी को समाज में मान्यता नहीं होती। नाटककार ने कवष की लोक कल्याणकारी भावना तथा उसकी कार्यकुशलता देखकर स्वयं राजा उसे अपनाता है ऐसा दिखाया है। इसलिए वर्णसंकरता को हटाना यह भी नाटक का उद्देश्य है।

'शारदीया' एक ऐतिहासिक नाटक है। ऐतिहासिकता का सहारा लेकर अपनी कल्पना द्वारा नाटककार ने उसे रचा है। प्रस्तुत रचना के पीछे नाटककार के ये उद्देश्य रहे हैं। तत्कालीन कला और उदात्त प्रेम का चित्रण करना जिस असाधारण वस्त्र को देखकर नाटक लिखने की नाटककार को प्रेरणा मिली उसे बुननेवाले कलाकार की कला का चित्रण तथा कल्पना के सहारे कलाकार का उदात्त प्रेम नाटककार ने चित्रित किया है। नाटकाकार का दूसरा उद्देश्य है राजनीतिज्ञों की कूटनीति का चित्रण करना शर्जेराव इस पात्र के संवादों से इस उद्देश्य की पूर्ति हुई है।

नाटककार का तीसरा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहा है धार्मिक सहिष्णुता प्रस्थापित करना। प्राचीन काल से लेकर आज तक ह्मारे राष्ट्र में हिंदू-मुस्लिम को लेकर जो समस्या है उसे मिटाने का प्रयास इसमें किया है। साथ में तत्कालीन राजाओं की विलासप्रियता का चित्रण करना भी नाटककार का उद्देश्य है। क्योंकि विलासप्रियता के कारण राजा दौलातराव सिंधिया के सामने आर्थिक समस्या निर्माण हुई है। इन्हीं उद्देश्यों के साथ-साथ गौण रूप में तत्कालीन संस्कृति को चित्रित करना, मराठा सरदारों की वीरता प्रदर्शित करना आदि उद्देश्य भी रहे हैं।